3. कबीर का काव्य पढ़ने पर पाठक के मन पर एक गहरा असर होता है कि समाज में जो कुछ चल रहा है वह सब क्या समाज के हित में या मानव मूल्यों की दृष्टि से सही है ? यह असर होने का कारण मुझे लगता है कि कबीर का विद्रोही - भाव है। उस विद्रोही - भाव का स्वरूप क्या है ? यह प्रश्न ही मुझे अपने इस शोध - कार्य की ओर बहुत दिनों से आकृष्ट करता रहा है।

इन सारे प्रश्नों के उत्तर पाने के लिए मैंने अपने लघु शोध - प्रबंध की निम्न प्रकार से रूपरेखा बनायी और काम में जुट गया।

प्रथम अध्याय :-

कबीर व्यक्तित्व एवं कृतित्व ।

द्वितीय अध्याय :-

कबीरकालीन परिस्थिति।

तृतीय अध्याय :-

कबीर की वाणी में अभिव्यक्त विद्रोह - भाव।

अ] जाति-पाँति के संदर्भ में विद्रोह।

आ] धर्म के संदर्भ में विद्रोह।

इ] पूजापाठ, बाह्याडम्बर के संदर्भ में विद्रोह।

ई] अंधविश्वास के संदर्भ में विद्रोह।

चतुर्थ अध्याय :-

उपसंहार।

इस विषय की व्याप्ति कितनी बड़ी और विस्तृत है यह स्पष्ट करने की जरूरत ही नहीं है। केवल विषय का ज्ञान अधिक सुस्पष्ट होने के लिए ही इस प्रकार से मैंने रचना की है। सम्बन्धित विषय का विचार करने के बाद जो निष्कर्ष हाथ आये वे उपसंहार में दिये हैं। अंत में संदर्भ ग्रंथों की सूची भी जोड दी है।

साथ में प्रत्येक ग्रंथ का प्रकाशन एवं संस्करण भी दिया है।

अहिंदी भाषी छात्र होते हुए भी मुझे अपने इस कार्य में श्रध्देय गुरुदेव डॉ. आनंद वास्कर जी का अध्ययन संपन्न पथ प्रदर्शन बहुत बडा सहायक साबित हुआ है। अपने व्यस्त जीवन प्रवाह में भी आपने मेरी समय असमय मौलिक सहायता करके मेरा मार्ग सुकर किया है। अत: मैं आपका बहुत ही ऋणी हूँ।

घरेलू ग्रामीण वातावरण एवं अनेक आपत्तियों के कारण एम्. फिल. की उपाधि पाना मेरे लिए नामुमकिन था। लेकिन वात्सल्यभरी प्रेरणा देनेवाले और साहित्याध्ययन में प्रोत्साहित करनेवाले श्रध्देय गुरुदेव प्रा. एस्. जी. महाजन और प्रा. व्ही. आर. चव्हाण जी ने मुझे इस कार्य में सदा ही उत्साहित किया।

सम्बन्धित सब लोगों का स्नेहभरा योगदान न मिलता तो मैं प्रस्तुत शोध - कार्य में सफल न हो पाता। जिन्होंने इस संशोधन कार्य में मेरी सहायता की है, उन सब के प्रति हृदय से आभार व्यक्त करना मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ।

मुझे अपने शोध कार्य में निरन्तर प्रेरणा देनेवाले और अपनी ओर से सक्रिय सहयोग देनेवाले मेरे मित्र प्रा. उमाजी पाटील, प्रा. सादिक देसाई, प्रा. शिवाजी मेनकुदळे, प्रा. गजानन मोसले, प्रा. जयंत कुलकर्णी, प्रा. बाळासाहेब चव्हाण, प्रा. सुरजकुमार वाघमारे, श्री. सुरेश कोडग, श्री. संभाजी शिंदि, श्री. ज्ञानदेव जाधव, श्री. हणमंत सोहनी, आदि को मैं हृदय से धन्यवाद देता हूँ।

प्रस्तुत शोध कार्य में मुझे आटपाडी कॉलेज, आटपाडी, कर्मवीर हिरे महाविद्यालय, गारगोटी, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर आदि ग्रंथालयों से पुस्तकें उपलब्ध हुई इसलिए मैं उन संस्थाओं के पदाधिकारियों का आभारी हूँ।

मेरे परिवार के समस्त सदस्यों का भी मुझे अनमोल सहकार्य प्राप्त हुआ है, अन्यथा इस कार्य में मैं सफल नहीं हो पाता। साथही मेरे जिजाजी की प्रेरणा का यह फल है। अत: मैं उनका अत्यन्त ऋणी हूँ। उन सब सहयोगी मित्रोंका भी आभारी हूँ, जिनकी शुभकामनाएँ मेरे साथ थी।

इस लघु शोध - प्रबंध का टंकलेखन श्री. गुरव बी. बी., आटपाडी ने उत्तम और बडी तत्परता से कर दिया। इसलिए मैं उनका हृदय से आभारी हूँ। भाग्येश्वरी प्रेस, कोल्हापुर ने समय पर उत्तम बाइडिंग कर दिया इसलिए मैं

उनका भी आभारी हूँ।

श्रध्देय डॉ. व्ही. के. मोरे, जी, डॉ. द्रविड जी, डॉ. के. पी. शहा जी, प्रा. शरद कणबरकर जी, प्रा. रजनी भागवत जी, प्रा. एम्. के. तिवले जी, प्रा. के. जी. वेदपाठक जी का आशीर्वाद मेरी अनेकों समस्याओं में सहायता और सफलता देता रहा हैं। भविष्य में भी इन सब गुरुजनों से आशीर्वादमयी योगदान की कामना करते हुए समादरणीय समीक्षकों के सामने प्रस्तुत लघु शोध - प्रबंध अवलोकनार्थ प्रस्तुत करता हूँ।

कोल्हापुर.

दिनांक :- 16 नवम्बर, 1992.

श्री. नांगरे गणपतराव सर्जेराव.

∴